REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2022

बीकानेर रियासत की सेना में गंगा- रिसाला (ऊंट वाहिनी सेना)

पार्वती गोदारा[1] , डॉ. महेंद्र चौधरी[2]
[1]वरिष्ठ शोधार्थी इतिहास एवं भारतीय संस्कृती विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर.
सहाय्यक आचार्य इतिहास [राजकीय महाविद्यालय छतरगढ़].
[2]सह आचार्य इतिहास बी.एन.डी राजकीय कला महाविद्यालय चिमनपुरा (जयपुर).

ऊंट वाहिनी सेना का इतिहास – एक परिचय

भारत में सैनिक उपयोग के संदर्भ में ऊंट का उल्लेख माघ के शिशुपाल वध कालग्रंथ में मिलता है । महाकवि माघ राजस्थान के इस मरुस्थलीय भाग में भीनमाल के निवासी थे जिनके अनुसार ईसा की आठवीं शताब्दी में भी सैनिक अभियानों में ऊँटो का उपयोग होता था। नवीं शताब्दी के अरब यात्री सुलेमान सौदागर ने अपने यात्रा वर्णन में मिहिरभोज की सेना में ऊंट सवारों के होने का उल्लेख किया है।

अहमदाबाद अभियान में मुगल बादशाह अकबर ने अपने अप्रत्याशित आक्रमण में सांडनियों का उपयोग किया था। राजस्थानी लोक साहित्य व लोकगीतों में ऊंट के मनोहर रूप का वर्णन मिलता है।

जिस प्रकार अरबों को ऊंट का अनन्य मित्र कहा जाता है उसी तरह रेगिस्तान के जहाज ऊंट के लिए राजस्थान की लड़ाकू जातियों में अरबों से भी अधिक प्रेम होता है।

रियासतकालीन बीकानेर राज्य के इस रिसाले की स्थापना एक नए राज्य की स्थापना के लिए 1465 ई. में एक पुण्य पर्व पर हुई थी । जोधपुर के राज दरबार में राव कांधल जी ने अपने अग्रज राव जोधाजी के समक्ष प्रण किया था की अपने भतीजे बीकाजी (राव जोधा के पुत्र) के लिये वे एक नये राज्य की स्थापना करेंगे।

30 सितम्बर 1465 को राव बीका ने अपनी सेना के साथ जोधपुर से प्रस्थान किया जिसमें एक सौ घुड़सवार, पाँच सौ सैनिक एंव ऊंटों की एक छोटी टुकड़ी शामिल थी । राव कांधलजी और बीकाजी के नेतृत्व में इस रिसाले ने कई लड़ाइयाँ लड़ी और 1470 ई. तक राव बीका ने अपने राज्य को पूरी तरह स्थापित कर लिया।

ऊंट वाहिनी सेना का पुनर्गठन –

महाराजा गंगासिंह का अंग्रेजों से घनिष्ठ संबंध होने के कारण वे अंग्रेजी सेना की आधुनिक तकनीक से प्रभावित हुए तथा इस तकनीक का प्रयोग रियासत की सेना के आधुनिकीकरण में किया। इसी क्रम में युद्ध के नये-नये तरीकों से युक्त करने के लिये 1889 में महामहिम महाराजा गंगासिंह जी बहादुर के आदेश से 500 ऊंट सवारों की टुकड़ी का पुनर्गठन किया गया और उन्हें शाही सेना में शामिल किया गया। रियासत के महाराजा के नाम पर इस रेजीमेंट (ऊंट वाहिनी सेना) का नाम गंगा-रिसाला रखा गया। इसे इम्पीरियल सर्विस ट्रूप से मान्यता भी मिल गयी ।

गंगा-रिसाला अपनी तरह की पहली ऊंट वाहिनी सेना थी जो क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों एंव अच्छी नस्ल के ऊंटों की उपलब्धता के कारण राज्य की सुरक्षा के लिये काफी उपयोगी थी ।

ऊंट वाहिनी सेना के (गंगा- रिसाला) निर्माण का उद्देश्य-

बीकानेर रियासत की विषम भौगोलिक परिस्थितियों एंव मरुस्थल में सैनिक अभियानो में ऊंट अत्यंत उपयोगी होता है। लम्बी दूरी की गश्त, आक्रमण एंव विशेष अभियानों में ऊंट उपयोगी सिद्ध हुए है। वे संचार व्यवस्था के अच्छे साधन साबित हुए है।

मरुस्थल मे चलते समय गद्दीदार पैरों के कारण ऊंट से किसी भी प्रकार का शोर नहीं होता है। ऊंटों के रिसाले की कोई भी टुकड़ी किसी भी शत्रु के स्थान से दो सौ-तीन सौ गज की दूरी से बिना अपने दल की सुरक्षा को खतरा पंहुचाए सहज ही निकाल सकती है। इस प्रकार ऊंट वाहिनी सेना की शांतिकाल एंव युद्धकालीन सेवाएँ किसी भी रूप में अन्य प्रकार की सेनाओं से कम उपयोगी नहीं है। गंगा-रिसाला की उपयोगिता एंव उद्देश्य को समझने के लिये ऊंट की विभिन्न विशेषताओं एंव मरुस्थल के रणक्षेत्र में उसकी उपयोगिता का विस्तृत वर्णन करना अनिवार्य है।

ऊंट की गति

सवारी के ऊंट को समान्यत: सड़क के टूटे भाग अथवा फिसलने वाले स्थानो के अतिरिक्त धीमी गति पर नहीं चलाया जाता। उसकी वहाँ सामान्य गति तीन या चार मील प्रति घंटा होती है। दुलकी चाल से ऊंट एक घंटे में सात-आठ मील चल सकता है। तेज गति से ऊंट एक घंटे में सामान्यत: 10-12 मील जा सकता है। बीकानेर, बाड़मेर, एंव जैसलमेर क्षेत्र के कुछ अच्छे ऊंट कम दूरी में इससे भी अधिक तेज गति से जा सकते है। अत्यंत आवश्यक परिस्थितियों में एक अच्छा, ठीक स्वास्थ्य वाला प्रशिक्षित ऊंट एक दिन में रेगिस्तान में साठ से सत्तर मील की दूरी तय कर सकता है। यदि ऊंट सवार को रास्ता मालूम हो तो रात में ऐसा ऊंट 40 से 50 मील की दूरी तय कर सकता है। ऊंटों की गति काफिले में चलने पर कम हो जाती है।

दूसरी और ऊंटों को चलने के लिए न तो सड़क चाहिए न ही समतल भूमि। वे किसी वे किसी भी प्रकार की रेतीली भूमि पर सहज ही दौड़ सकते है। इस प्रकार ऊंटों को दस्ता, शत्रु को अचानक हमले से चकित करने तथा सामरिक अभियानों मे सफलता प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण कड़ी सिद्ध होता है।

ऊंट का प्रशिक्षण

सैनिक महत्व की दृष्टि से छः वर्ष की आयु का ऊंट सेना के लिए उपयुक्त रहता है ऊंट को सवारी के उपयोग में लाने का प्रशिक्षण उसके बैठने की स्थिति से ही आरंभ हो जाता है। ऊंट को सर्वप्रथम कहने के साथ बैठना और काठी लगाने के लिए तैयार होना सिखाया जाता है। धीरे-धीरे ऊंट को बैठाकर उस पर काठी बांधने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

सवारी के ऊंट नकेल के सहारे चलते है। नकेल खूंटी सी या गोल घेरे सी बनाई जाती है। नकेल ऊंट के या तो ऊपरी नथुने या नथुने के पीछे चमड़े में फसाई जाती है। हल्की डोर से खूंटी के साथ लंबी रस्सी बांधी जाती है जिससे ऊंट चलाया जाता है। उसके बाद ऊंट पर एक व्यक्ति को बैठाकर, ऊंट को नकेल के इशारों पर चलना सिखाया जाता है। अंततोगत्वा ऊंट को नकेल पर चलाया जाता है। शुरुआत मे उसे धीरे-धीरे चलाते है और बाद में उसे दौड़ाते है।

ऊंट से उतरने से पहले ऊंट सवार को कुछ देर तक ऊंट को रोक कर बैठाने के बाद तसल्ली से उतरना चाहिए अन्यथा ऊंट का यह स्वभाव बन सकता है कि वह सवार के नीचे उतरते समय ही वापस उठ खड़ा हो जाये।

ऊंट पर सवारी करते समय सवार का ऊंट के साथ व्यवहार अत्यंत मित्रतापूर्ण होना चाहिए। नकेल को पकड़कर, पैरों को सावधानी से उठाकर ऊंट पर बैठना चाहिये ताकि ऊंट को कष्ट ना हो।

ऊंट सवार को बिना दबाव डाले, धक्का दिये या झटका दिये ऊंट कि पीठ पर बैठना चाहिये। ऊंट को नकेल के इशारे से उठना सिखाया जाता है तथा उठाते वक्त ऊंट को न लात मारे और न ही नकेल को झटका दें।

इस तरह प्रशिक्षित ऊंट द्वारा युद्ध क्षेत्र में बिना किसी शोरशराबे के शत्रु को आश्चर्यचकित किया जाना असंभव नहीं होगा।

ऊँटो कि देखभाल व रखरखाव

ऊंट कि नियमित देखभाल का मुख्य उद्देश्य उसके चमड़े को धूल तथा चर्म रोगों से बचाना तथा उसके रक्त संचार को ठीक से रखना है। यदि ऊंट कि देखभाल उचित रूप से नहीं हो तो वह उच्चखल हो जाता है। ऊंट कि देखभाल एंव रखरखाव के लिये घोड़ा, ब्रुश, खुर्रा, धूल, झाड़ने का कपड़ा आदि का प्रयोग दिन में दो बार करना चाहिये। ऊंट के सभी अंगों को पूरी तरह से साफ कर उनका निरीक्षण करना चाहिये। ऊंट का निरीक्षण करने पर सवार को यदि ऊंट के शरीर पर कोई चोट, घाव अथवा खरोंच दिखाई दे तो प्राथमिक उपचार हेतु पशु चिकित्सक को दिखाना चाहिये।

ऊंट कि दक्षता बनाये रखने के लिये यह आवश्यक है कि ऊंट को नियमित अंतराल के बाद पानी पिलाया जाना चाहिये। ऊंटों को गर्मी में दो बार एंव सर्दी मे के बार पानी पिलाया जाता है। गर्मी में इनको प्रातः दस बजे एंव साँय काल चार बजे पानी पिलाने का समय होता है। सर्दी मे बारह बजे पानी पिलाना सर्वोत्तम होता है क्योंकि धूप से पानी गर्म हो जाता है। किसी भी अभियान में जाने के तीन घंटे पहले ऊंट को पानी पिलाया जाना चाहिये और गंतव्य स्थान पर पहुँचने के दो घंटे के बाद उसको पानी पिलाना चाहिये।

सामान्यतः ऊंट प्रतिदिन पाँच से दस गैलन पानी पीता है। स्थान एंव समय के अनुसार पानी कि मात्रा घटती बढ़ती रहती है।

ऊँटो मे आपस मे काटने का स्वभाव होता है, इसलिये एक ही नांद में एक से अधिक ऊंटों को खिलाना ठीक नहीं है। अलग-अलग नांद में खिलौने से काफी खाद्य सामग्री व्यर्थ होने से भी बच जाती है। एक साथ खिलौने से सामान्यतः ऊंटों को पुरो भाग नहीं मिल पाता है तथा वह जल्दी खाते है। परिणामस्वरूप उनको पेट कि बीमारियाँ हो जाती है। ऊंट को खाने में सूखा चारा, हरा चारा,अनाज(दाना) और नमक, फिटकरी आदि दिया जाता है। सामान्यतः ऊंटों को दिन मे दो बार खिलाया जाता है।

ऊंटों को न केवल सवारी या सामान लादने के लिये ही काम में लिया जाता है अपितु उनको ऊंट गाड़ी खिचने, पखाल लादने, गहरे कुएं से पानी खिंचने और खेत जोतने के काम में भी लिया जाता है। ऊंट वस्तुतः मरुस्थल का जहाज है जो मरुस्थल के लोगों का एक मात्र सहारा है।

गंगा-रिसाला का स्वरूप

राजपूताना के राजपूत राज्यों द्वारा ऊंट की बढ़ती महत्ता के कारण 'सुतरखाना' विभाग की स्थापना की गई तथा बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, एंव जयपुर आदि राज्यों मे ऊंट कोर की स्थापना की। राजस्थान के राजपूत शासकों को 'चाकरी' के एक भाग के रूप मे पटायतों से भी ऊंट प्राप्त होते थे।

ऊंटों को राजस्थान के प्रसिद्ध केन्द्रों जैसे बीकानेर, जैसलमेर, नागौर आदि जगहों से खरीदा जाता था। 'बलोची' एंव 'गाजी' प्रकार की विदेशी नस्लों को ज्यादा पसंद किया जाता था लेकिन इन नस्लों के ऊंट की अनुपलब्धता के कारण 'देशी' (स्थानीय) नस्लों के ऊंट को भी खरीदा जाता था। भट्ट एंव राजपूतों सहित गुजराती व्यापारियों का इस व्यापार मे ज्यादा बोल-बाला था।

एक ऊंट की कीमत 54 रु. से लेकर 225 रु. के बीच होती थी जबकि एक ऊंटनी (फिमेल-केमल) की कीमत 25 रु. से लेकर 90 रु. के बीच थी। पशुओं की खरीद की यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती थी।

ऊंटों की पहचान के लिए इनका रिकॉर्ड रखा जाता था जिसमें उनकी कीमत के साथ-साथ नस्ल, आयु, रंग प्राकृतिक-विकृति आदि को दर्ज किया जाता था। जब भी कोई ऊंट बिना किसी प्राकृतिक विकृति या चोट के कारण घायल होता था, तो इस तथ्य का भी उल्लेख किया जाता था। पशुओं का भौतिक सत्यापन नियमित अंतराल पर किया जाता था।

राज्य में ऊंटों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई थी। एक रेबारी, राईका एवं हाकलियों को क्रमशः ऊंटों के प्रशिक्षण करने, चराने एवं चलाने के लिए नियुक्त किया जाता था।

जब भी कोई ऊंट किसी भी कारणवश सक्रिय सेवा के लिए बेकार हो जाते थे, तो उन्हें बिना सोचे समझे छोड़ दिया जाता था लेकिन इस की प्रविष्टि रजिस्टर में जरूर दर्ज की जाती थी। रियासत मे ऊंटों के इलाज के लिए प्रावधान था। गुड, फिटकरी, अल्कोंहोल आदि सामान्य वस्तुएँ ऊंटों के इलाज के लिए इस्तेमाल की जाती थी।

गंगा-रिसाला का बीकानेर की सेना में योगदान

इस नव-पुनर्गठित ऊंट वाहिनी सेना का सर्वप्रथम उपयोग सन1899-1900 ई. में रियासत में पड़े भयंकर अकाल के समय, अकाल-राहत कार्यों हेतु किया गया।

अकाल की गंभीरता को देखते हुए, महाराजा गंगासिंह ने 23 अगस्त 1899 को एक विशेष अकाल विभाग का गठन किया जिसका प्रमुख स्वयं महाराजा बने। महाराजा ने इंपीरियल सर्विस ट्रूप्स के मेजर एच.पी. कॉक्स के सात रियासत में पड़े इस भयंकर अकाल की समस्या पर चर्चा की एवं उनके सुझावों के अनुसार महाराजा ने अपने ऊंट वाहिनी सेना (गंगा-रिसाला) को अकाल विभाग के एक अंग के रूप में परिवर्तित कर दिया। गंगा रिसाला के साथ कमीशंड, नॉन-कमीशंड अधिकारियों एवं जवानों को राज्य की सेना के साथ अकाल-राहत कार्यों में लगा दिया गया। साथी ही महाराजा ने विभिन्न संबंधित विभागों के सभी अधिकारियों को आदेश दिया कि वे उन्हें संकट के सभी पहलुओं सहित, राहत के उपायों एवं प्रगति से अवगत कराते रहें।

संपूर्ण रियासत में सभी अकाल राहत कार्यों का समय-समय पर महाराजा गंगा सिंह द्वारा स्वयं निरीक्षण किया गया। समय पर मदद एवं अकाल राहत कार्यों की स्वयं महाराज द्वारा व्यक्तिगत निगरानी ने, रियासत की प्रजा को इस आपदा से बचाने में सक्षम बनाया।

सर आर्थर मार्टिडेल (राजपुताना में गवर्नर जनरल के एजेंट), मार्च 1900 ई. में बीकानेर की यात्रा पर आए थे उन्होंने बीकानेर राज्य की अकाल प्रशासन को पूरे राजपूताना में सर्वश्रेष्ठ बताया इस दुर्भिक्ष के समय रियासत में फसलों की कम उपज के कारण खाद्यान्न की कीमतें बहुत अधिक बढ़ गई थी ईस अकाल से पहले लगातार खराब फसल के कारण बाजार में पुराने स्टॉक लगभग समाप्त थे। स्थानीय अनाज डीलरों ने खाद्यान्न की कीमतें 3 शेर प्रति रुपया तक बढ़ा दी गई थी। महाराजा गंगा सिंह ने तुरंत पंजाब और उत्तर पश्चिमी प्रांत से खाद्यान्न के आयात की व्यवस्था की लेकिन महाराजा के सामने मुख्य समस्या रेलवे स्टेशनों से राज्य के विभिन्न दूर दराज के हिस्सों में अनाज का परिवहन करना था। उस समय पूरे राज्य में केवल 87 मील की रेलवे लाइन थी तथा बेहद सीमित सड़कों का नेटवर्क था। महाराजा ने महसूस किया कि रियासत की सेना ही है जो इस कार्य को दक्षता के साथ कर सकती है। इसलिए महाराजा ने गंगा रिसाला का इस्तेमाल खाद्यान्नों को रियासत के सुदूर गांव तक पहुंचाने के लिए किया और इस तरह से ऊंट वाली सेना ने रियासत के असहाय लोगों की पीड़ा को कम करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। इसके अतिरिक्त महाराजा गंगा सिंह ने प्रशिक्षित एवं योग्य गंगा रिसाला का उपयोग रियासत में डाकूओं का सफाया करने में किया।

रियासत में कानून व्यवस्था बनाए रखने एवं नागरिक सेवा के लिए पुलिस के रूप में भी ऊंट वाहिनी सेना का इस्तेमाल किया गया अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गंगा रिसाला को प्रथम अवसर चीन के बोक्सर युद्ध में मिला इसके बाद ब्रिटिश सोमालीलेंड ने इस सेना का उपयोग किया गया। साम्राज्यवादी युद्धो (प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध) में गंगा रिसाला ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए अपनी उपयोगिता को सिद्ध किया तथा बीकानेर रियासत की गौरवशाली परंपरा को कायम रखते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति एवं सम्मान अर्जित किया।

संदर्भ

1. रामकरण जोशी-मारवाड़ का इतिहास, भाग-2
2. जेम्स टोड-एनल्स एंड एक्टिविटीज़ ऑफ राजस्थान

3. राज्य श्री कुमारी- महाराजा बीकानेर का जीवन चरित
4. शूतरखाना ऊंटों के विभाग को कहा जाता था तथा इस शब्द को मुगलों से लिया गया था।
5. रिपोर्ट ऑन पोलटिकल एडमिनिस्ट्रेसन ऑफ द राजपूताना स्टेट फॉर 1899-1900
6. ओझा,जी.एच. द हिस्ट्री ऑफ राजपूताना वॉल्यूम-V
7. पन्नीकर, के,एम,- हिज हाईनेस द महाराजा ऑफ बीकानेर